IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शीर्षक:- भारत एवं मध्य प्रदेश के राजनैतिक परिपेक्ष्य में महिलाओं की स्थिति।

ANUJ AHIRWAR

RESEARCH SCHOOLAR

MAHARAJA CHHATRASAL BUNDELKHAND UNIVERSITY CHHATARPUR

प्रस्तावना:-

राजनीति में महिलाओं की भागीदारी संभवतः प्रागैतिहासिक काल से रही है। इस काल में मातृसत्तात्मक व्यवस्था थी। अतः महिलाएं कबीले की मुखिया रही है। आज भी कुछ आदिवासी समाज में स्त्रियों की प्रमुखता परिवार में देखी जा सकती है। वैदिक काल में यह व्यवस्था परिवर्तित होकर पुरूष सत्तात्मक हो गईं परंतु महिलाओं को शासकीय सेनानी, राज्य-सलाहकार या मंत्राणी, विदुषी, समाज नेत्री, पुरोहित आदि सभी रूपों का उल्लेख वैदिक साहित्य में मिलता है।

भारत में सामाजिक पुनर्जागरण काल और नारी मुक्ति संघर्ष की शुरुआत 19 वीं शताब्दी में एक साथ हुई थी। जब बंगाल में ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राम मोहन राय, बंबई में प्रार्थना समाज के संस्थापक श्री महादेव गोविंद रानाडे और उत्तर पश्चिम भारत में आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपने सामाजिक सुधारो में स्त्री उत्थान में कार्य को प्रमुख स्थान दिया। राजनीति के क्षेत्र में महिलाओं की वास्तविक सहभागिता 20 वीं शताब्दी से ही मानी जा सकती है। भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी तथा अधिकारों के लिए उनके संघर्ष का प्रथम चरण 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता प्राप्ति के संघर्ष से प्रारंभ होता है। महिलाओं ने सर्वप्रथम गृह शासन 1916 के आंदोलन में भाग लिया फिर नमक सत्याग्रह एवं सविनय आवज्ञा आंदोलन में भी भाग लिया।

भारतीय राजनीति में महिलाओं की स्थिति:-

भारत के इतिहास में आधुनिक काल की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी से अधिक महत्वपूर्ण है। रानी लक्ष्मीबाई, मैडम भीकाजी कामा, कस्तूबा गांधी, अरुणा आसफ अली, सरोजनी नायडू, सुचेता कृपलानी, विजय लक्ष्मी पंडित, आदि ने हमारे स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

भारतीय राजनीति में आजादी के 75 वर्षों बाद भी महिला की भागीदारी बहुत कम बनी हुई है।

भारत में कई दशकों बाद महिलाओं के लिए लोकसभा तथा विधानसभा में आरक्षण के लिए महिला आरक्षण विधेयक 2023 (128वाँ संवैधानिक संशोधन विधेयक) अथवा नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित कर दिया गया है। यह विधेयक लोकसभा, राज्य विधानसभाओं और दिल्ली में महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटें आरक्षित करता है। वर्तमान समय में लोकसभा में 82 महिला संसद (15.2%) और राज्यसभा में 31 महिलाएं (13%) है। महिला प्रतिनिधित्व के मामले में बांग्लादेश (21%) और पाकिस्तान (20%) भी भारत आगे है।

भारत में स्वतंत्रता के बाद पहली केंद्र सरकार (जवाहर लाल नेहरू) के पास 20 कैबिनेट मंत्रालयों में केवल एक महिला (राजकुमारी अमृता कौर) थी, जिन्हे स्वास्थ मंत्रालय का प्रभार दिया गया था। लाल बहादुर शास्त्री की सरकार में एक भी महिला को जगह नहीं दी गई। उसके बाद इंदिरा गांधी की 5वीं, 6वीं, 9वीं कैबिनेट में एक भी महिला केंद्रीय मंत्री नहीं थी। केवल राजीव गांधी के मंत्रिमंडल में एकमात्र महिला (मोहसिना किदवई) को शामिल किया गया था।

मोदी सरकार में महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है। 16 वीं लोकसभा में 61 महिला चुनाव जीतकर आई थी। जिसमें 9 महिलाओं को मंत्रिपरिषद में जगह दी गई थीजोकि अब तक सबसे ज्यादा मंत्री बनीं हैं वहीं 17 वीं लोकसभा में 78 महिला उम्मीदवार जीती थीं। परंतु मंत्रिमंडल में उनकी संख्या कम हो गई। 17 वीं लोकसभा में महिलाओं का प्रतिशत 14.36% रहा जो अब तक का सबसे अधिक हैं। भारत में वर्तमान में एकमात्र महिला मुख्यमंत्री ममता बनर्जी है जोकि तृणमूल कांग्रेस से है। जबकि भाजपा और कांग्रेस से एक भी महिला मुख्यमंत्री नहीं है। भाजपा की स्थापना से लेकर अब तक सिर्फ तीन राज्यों में ही महिला मुख्यमंत्री रही हैं एवं जिसमें से मध्यप्रदेश की मुख्यमंत्री उमा भारती को तो बीच सत्र में ही हटना पड़ा था। राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने अपना पूरा कार्यकाल पूर्ण किया था। जबकि अपनी दम पर बसपा चलाने वाली उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती तीन बार, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी तीन बार और तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जयललिता ने अपने दम पर सरकार चलाई है।

भारत में प्रथम आम चुनाव 1952 से लेकर अभी तक सिर्फ 14 महिलाओं को ही मुख्यमंत्री बनने का गौरव हासिल हुआ है।

मध्यप्रदेश की राजनीति में महिलाओं की स्थितिः-

मध्यप्रदेश में महिला नेतृत्व सालों पुराना है। अहिल्याबाई होलकर,रानी दुर्गावती, कमलापति से लेकर राज्य गठन के बाद राजमाता सिंधिया, उमा भारती और सुमित्रा महाजन तक महिलाओं ने प्रदेश का नेतृत्व किया है।

मध्यप्रदेश के गठन से लेकर 2019 तक लोकसभा चुनावों में प्रदेश में एक बार में अधिकतम 6महिला सांसद चुनी गईं। ये सभी 29 लोकसभा सीटों की 20 फीसदी मात्र है। देश में महिला सशक्तिकरण की बात होती है, लेकिन लोकसभा और विधानसभा में उनको 33 फ़ीसदी आरक्षण का विधेयक अब संसद में पास हुआ है। हालांकि मध्यप्रदेश में पंचायत और नगरीय निकाय में 50 प्रतिशत आरक्षण है।

मध्यप्रदेश में 1957 से 2019 तक के लोकसभा चुनावों में 1962 और 2009 में अधिकतम 6 महिला सांसद चुनी गईं।1967,1991 और 1996में प्रदेश से पांच महिला सांसद चुनी गईं थीं।

मध्यप्रदेश में एकमात्र महिला मुख्यमंत्री उमा भारती (2003,2004) रही है।

मध्यप्रदेश के इंदौर से 9 बार की सांसद चुनी गईं सुमित्रा महाजन 2014 में लोकसभा अध्यक्ष रही वह भारत की दूसरी महिला स्पीकर रही है। विदिशा से सांसद सुषमा स्वराज विदेशमंत्री तथा नेता प्रतिपक्ष लोकसभा रही हैं। कांग्रेस की कद्दावर नेता रही जमुना देवी 1952 से 1957 लोकसभा सदस्य रही वे प्रदेश की पहली महिला उपमुख्यमंत्री व विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष के पद पर रही है।

विद्या चतुर्वेदी 7 वीं और 8 वीं लोकसभा सदस्य चुनी गईं वे 1980 से 1989 तक सांसद रही वे उस दौर की तेज तर्रार नेता मानी जाती है।

भोपाल की नजमा हिपतुल्ला राज्यसभा की उपसभापति रही है।

वर्तमान विधानसभा चुनाव में मध्यप्रदेश में महिलाओं ने बढ़ चढ़कर मतदान में हिस्सा लिया 2023 के विधानसभा चुनावों में कुल मतदान 77.2% रहा वही महिला मतदान 76.03% रहा मध्यप्रदेश के विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने 28, कांग्रेस ने 29 व आप ने 10सीटों पर महिलाओं को उम्मीदवार बनाया था जिसमें से बीजेपी की 21 तथा कांग्रेस की 7 महिला उम्मीदवार विजयी रही जोकि विधानसभा में महिलाओं का 11.73% हैं ।

सारांश:-

भारत आज भी आज़ादी की 75 वीं सालगिरह मना रहा है अनेक कार्यक्रम किए जा रहे है परंतु आज़ादी के 75 वर्षों बाद भी भारत की आबादी का आधा हिस्सा आज राजनैतिक रूप से पिछड़ा हुआ है उसकी भागीदारी नगण्य के समान है यदि महिलाओं की भागीदारी किसी देश में नहीं है तो हम वहां के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका तथा उनकी भागीदारी तथा कमजोर स्थिति पर सवाल आज भी खड़े होते है। महिलाओ ने आज अपनी क्षमता को साबित किया आज हर क्षेत्र में महिलाएं अपना परचम लहरा रही जमीन से लेकर आसमान तक उन्होंने खुदको साबित किया है अब समय आ गया है कि हमें उनको आबादी के अनुसार भागीदार बनाने की जरूरत है।

संदर्भ सूची

1. आर्य अशोक भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका
2. कुमार प्रशांत भारत एवं उत्तरप्रदेश के राजनीतिक परिपेक्ष में महिलाओं कि स्तिथि की विवेचना
3. भारती निरंजन कुमार भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी
4. सिंघल बिपिन कुमार भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
5. इंडियन एक्सप्रेस 19 सितंबर 2023
6. Patrika.com/bhopal -news/women -s-day-special.in.poltics
7. Http://sansad.in
8. Https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/women-reservation-bill2023